ढ़ौन, तोते और सरसों

– जगमोहन चोपता

खेत में सरसों उगती है तो उगती हैं ढेर सारी चिंताएं भी फसल को सहेजने की, लेकिन छोटू के दगड़यों की टोली पर इन चिंताओं के बादल बहुत समय तक रहें ऐसा कैसे हो सकता है। चिंता के पलों के बीच ही चल पड़ती है सेरों में सरसों की कटाई के दौरान के मजेदार किस्से और बीच–बीच में फूटती है हंसी की किलकारी ठीक वैसे ही जैसे तोते झुण्ड उड़ते हुये करते हैं कलरव!

बराली नदी घाटी के किनारे सरसों के खेत पककर तैयार हैं। खेतों में जहां–तहां जंगली जानवरों और पक्षियों को डराने के लिये डरूण्या (काक भगोड़ा) खड़े हैं। हल्की–हल्की हवा से वे धीरे–धीरे हिल रहे हैं। दूर से ऐसा लग रहा है जैसे खेतों में बहुत से लोग खड़े होकर पक्षियों को भट्या (भगा) रहे हों। इन्हीं डरूण्या के साथ–साथ लोग अब सरसों की फसल काटने के लिये जुटे हैं। सरसों की फसल को काटना कहना ठीक नहीं होगा, क्योंकि इसकी फसल को जड़ सहित उखाड़ा जाता है। इधर लोग अपने परिवार सहित सेरों में डेरा डाले हैं तो उधर तोतों का परिवार भी सरसों खाने के लिये डटे पड़े हैं। वे सरसों के पूरे पौध को काटकर आम के पेड़ों पर चले जाते हैं। जहां वे आराम से इसको बीन–बीन कर खाते हैं। ऐसे में तोतों को भगाने के लिये बनाये डरूण्या भी बेकाम साबित हो रहे हैं। तोतों के झुण्ड की किसानों के साथ एक तरह की होड़ लगी है। जैसे–जैसे खेत खाली हो रहे हैं वैसे–वैसे तोते के झुण्ड में भी अपने खाने के भण्डार लुटने से खलबली मची है। ऐसे में सरसों के खेतों पर किसका हक है कहना कठिन हो रहा है।

छोटू सरसों के पौधों के बीच–बीच में उगे जंगली क्वसा (फली) की खरपतावार को खाने में मस्त है। अचानक मां की आवाज उसका ध्यान भंग करती है। मां आवाज देती है 'ऐ ला फटाफट आवा ये तोताल सब घरया खेल।' (प्यारे जल्दी आ तोते के झुण्ड ने सारी सरसों खा लिया है) मां की आवाज सुनकर छोटू फिर से सरसों को उखाड़ने में लग जाता है। सरसों को बहुत ही करीने से उखाड़ना होता है। ज्यादा जोर–जबरदस्ती करने पर उसकी फलियों से सरसों बिखरने लगते हैं। वह धीरे–धीरे पांच–सात पौध उखाड़ने के बाद उनकी छोटी सी ढेरी बना रहा है। इन ढेरियों को मां एकट्ठा कर पुरानी साड़ी के ऊपर बड़ी ढेरी लगा रही है।

किसान चीजों का तरह–तरह से उपयोग करने में माहिर होते हैं। घर की पुरानी साड़ियों का सरसों की फसल के

लिये इससे अच्छा क्या उपयोग हो सकता है। साड़ी में सरसों रखने का फायदा यह होता है कि उससे सरसों की फलियों से गिरने वाला सरसों साड़ी में ही इकट्ठा रहता है। दोपहर को बाबा (पिताजी) टिफन पर भात और छां साग (कड़ी) लेकर पहुंच चुके हैं। भात को एक किनारे रखकर वे भी सरसों की पौध को उखाड़ने पर लग गये हैं। मां साड़ियों को बिछाकर उसमें सरसों के उखाड़े पौधों की ढेरी लगा रही है। वे जल्दी–जल्दी चार ढेरियों को बनाती हैं। जिसमें छोटू, बड़ा भाई मनमोहन और बाबा के लिये ढेरिया उनकी सामर्थ्य के हिसाब से लगा दिये गये हैं।

तोतों के झुण्ड का खेतों में सरसों खाने के दबाव के बावजूद छोटू का ध्यान सरसों उखाड़ने से ज्यादा बीच–बीच में खरपतवार के रूप में उगी जंगली फलियों को खाने में है। ये फलियां मटर की फलियों से बहुत छोटी किंतु उससे ज्यादा स्वादिस्ट होती हैं। मां बार–बार डपट रही है– देख तोताल पूर पूंगण खैली कैरेल अर तू त क्वसा खाण मां लग्यू। (देख तोतों ने पूरा खेत खा लिया है और तेरा ध्यान फलियों पर ही है) यह सुनते ही छोटू फिर सरसों को उखाड़ने में जुट जाता है। नदी के किनारे बने इस सेरों (सिंचित खेत) में सभी लोग अपने–अपने परिवार के लोगों के साथ जुटे पड़े हैं। वे जल्दी जल्दी सरसों को निकालने में लगे हैं।

सरसों के पकने के दौरान अधिकांशतः ढांढा (ओले) पड़ता हैं। यह मौसम बदलने के साथ हर साल ही होता है। ऐसे में पूरे चार महीने की मेहनत पर पानी फिर जाता है। ढ़ाढे से कूटी सरसों को उखाड़ना अपने–आप में चुनौतिपूर्ण होता है। लेकिन किसान हैं कि हर बार तोतों और ढ़ांढे के बावजूद उतने ही उत्साह से इसकी बुवाई करते रहते हैं।

चार भारे उखाड़ने के बाद वे भात खाने के लिये तैयारी करते हैं। छोटू भागकर पानी के लिये गदेरे के किनारे स्यवेणी (जलस्रोत) के लिये डरम लेकर भागता है। गदेरे के रेतिले किनारे दिन में खूब गरम हैं लेकिन स्यवेणी का पानी इतना ठण्डा रहता है कि पूछो मत। वहां जाकर पहले तो छोटू खूब छपोड़कर हाथ मुंह धुलता है और फिर फटाफट डरम भरकर सेरों की ओर लौटता है। वापसी में वो सेरों के किनारे से पांच–सात तिमुला के पत्तों को तोड़ता है। इनसे भात खाने के लिये थालियां बनाई जाती है। फिर चारों जुट जाते हैं भात खाने पर।

भात खाने के बाद मां दूसरे दिन सुबह के लिये एक–एक भारा सरसों का उखाड़ने के लिये जुट जाती हैं। साम होते–होते लोग आवाज देना शुरू कर देते हैं। चलो हो अंध्यर हूण वौल च! (चलो! अंधेरा होने वाला है) छोटू भी झटपट अपना भारा पीठ पर लगाकर घर की ओर चल पड़ता है। बराली से घर की चढ़ाई छोटू को किसी एवरेस्ट से कम नहीं लगती। लेकिन काम का दबाव इतना होता है कि रोज दो–चक्कर सरसों के लाना मजबूरी होता है।

घर आकर सभी आंगन में सरसों के भारे को पटकते हैं और वहीं पसर जाते हैं। मां आते ही उनका कुनिका (शंकुनुमा ढेरी) तैयार करने में जुट जाती है। सरसों को उखाड़ने के पांच–सात दिन बाद इनकी मंडाई होती है। मंडाई के बाद फटल्या (कपड़े या टाट से हवा करना) लगाकर इनको साफ किया जाता है। इन सरसों से पूरे सालभर के लिये तेल का बड़ा जुगाड़ हो जाता है। अब जल्द ही मां इन सरसों से पहली पिराई के लिये देगी जिसको नौ रवट्टा के लिये देवताओं के लिये प्रसाद बनाने के लिये म्यवाक के लिये दिया जायेगा। देवताओं को अर्पित करने के बाद ही इस सरसों से घर में खाने के लिये उपयोग होगा।

इधर स्कूल में परीक्षाओं के बाद सभी बच्चे अलसाये से स्कूल पहुंचते हैं। गुरूजी लोग रिजल्ट की तैयारियों में है छोटू को रिजल्ट से ज्यादा अपने सरसों के खेतों की चिंता है। स्कूल का रिजल्ट तो उसके हाथ पर है, सालभर थोड़ा–थोड़ा पढ़कर पास हो ही जाता है। लेकिन सरसों की कटाई रूपी रिजल्ट मौसम और तोतों के रहमोकरम पर रहता है। ऐसे में जिस साल ढ़ाढे ज्यादा पड़ जाय उस साल खाने और साल के अंतिम दिनों में सर पर लगाने के तेल का टोटका रहता है।

लेकिन छोटू के दगड़यों की टोली पर इन चिंताओं के बादल बहुत समय तक रहे ऐसा कैसे हो सकता है। चिंता के पलों के बीच ही चल पड़ती है सेरों में सरसों की कटाई के दौरान के मजेदार किस्से और बीच–बीच में फूटती है हंसी की किलकारी ठीक वैसे ही जैसे तोते झुण्ड में उड़ते हुये करते हैं कलरव!

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, चमोली, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)